



पहली कुंवारी चूत मुझे मिली मुँह बोली बहन की -1

“आज करीब 36 साल हो गए चोदते हुए और 50 से ज्यादा चूतों के साथ मैं हमबिस्तर हो चुका हूँ। मैं आज उस चुदाई के बारे में बता रहा हूँ जब मेरे जीवन की पहली कुंवारी लड़की आई थी और जिसका मैंने कौमोर्य भंग किया था। ...”

Story By: प्रशान्त वर्मा (prashantverma)

Posted: Sunday, May 22nd, 2016

Categories: [जवान लड़की](#)

Online version: [पहली कुंवारी चूत मुझे मिली मुँह बोली बहन की -1](#)

पहली कुंवारी चूत मुझे मिली मुँह बोली बहन की -1

मैं अब पचास साल के ऊपर का हो गया हूँ। ऊपर वाले कि बड़ी इनायत है कि आज भी सेक्स में खूब मज़ा आता है और मुझे अभी भी चुदाई के लिए साथी मिल जाते हैं। आज करीब 36 साल हो गए चोदते हुए और 50 से ज्यादा चूतों के साथ मैं हमबिस्तर हो चुका हूँ।

आज जो मैं लिख रहा हूँ.. वो मेरी ज़िन्दगी में मेरे साथ हुआ है। मेरी इस घटना में कल्पना का कोई स्थान नहीं है।

मैं आज उस चुदाई के बारे में बता रहा हूँ जब मेरे जीवन की पहली कुंवारी लड़की आई थी और जिसका मैंने कौमोर्ष्य भंग किया था।

आपकी आशानुसार नाम और जगह दोनों ही काल्पनिक हैं।

यह घटना 1970 के दशक के आखिरी सालों की है.. तब मैं ग्रेजुएशन कर रहा था.. सेक्स का अनुभव पहले से ही था इसलिए कुछ फितरत हो गई थी लड़की पटाने की.. लेकिन एक दिक्कत थी कि छोटा शहर था और मैं और मेरा परिवार काफी जाना हुआ था.. इसलिए बिना पूरा भरोसा हुए किसी को प्रपोज करना बड़ी समस्या थी।

मेरे घर से लगा हुआ ही एक परिवार और रहता था.. जो बहुत बढ़िया लोग थे। कुछ साल पहले ही उनकी शादी हुई थी। हमारे दोनों परिवार के बीच काफी घनिष्ठता थी। मैं उन लोगों को भईया और भाभी कहता था। मेरे इन भाई साहब की ससुराल भी उसी शहर में थी.. इसलिए उनके ससुराल के सारे सदस्यों से हम लोगों काफी घुले-मिले हुए थे।

उसमें से एक लड़की थी.. जिसका नाम सारिका था.. वो मेरे पड़ोसी भईया की साली थी। चढ़ती जवानी का माल थी और मेरी बहनों के साथ की ही थी। जैसा कि होता है.. घर में आना-जाना था और बातें भी होती थीं। वो मुझे भईया कहती और रक्षा बंधन में राखी भी बाँधती थी।

हकीकतन मेरा उसको लेकर कोई भी गलत इरादा नहीं था.. लेकिन ज़िन्दगी में कुछ ऐसे पल आ जाते हैं कि इंसान उस रास्ते पर चल पड़ता है.. जिस पर उसने कभी सोचा नहीं होता है।

शुरूआत होली से हुई थी.. मैं होली खेलने अपने दोस्तों के साथ तैयार बैठा था और उन्हीं में से किसी दोस्त के आने का इंतज़ार कर रहा था।

तभी भईया के ससुराल वाले आ गए और उनके यहाँ होली खेलने लगे। मेरे माता पिता और बहनें भी उन्हीं के यहाँ उन लोगों से खेलने चली गईं।

औपचारिकता निभाने के लिए मैं भी वहाँ गया.. लेकिन जब गीली होली होने लगी तो मैं वहाँ से खिसक कर बाहर बरामदे में आ गया.. क्योंकि अभी से मुझे भीगने का बिल्कुल भी मन नहीं था।

मैं वहीं खड़े बाहर गेट की तरफ टकटकी लगाए अपने दोस्त का इंतज़ार करने लगा। तभी किसी ने पीछे से मेरे ऊपर रंग की बाल्टी डाल दी। अचानक इस हमले से मैं अचकचा गया और गुस्से से पीछे मुड़ कर देखा तो सारिका 'खी.. खी..' करके हँस रही थी और चिल्ला रही थी 'भईया होली है.. बुरा न मानो होली है..'

मेरा बहुत तेज़ दिमाग खराब हुआ.. लेकिन हँस भी दिया.. आखिर होली है। कब तक मैं सजा-धजा बचा रहूँगा।

मैंने हंसते हुए कहा- सारिका यह तो बदमाशी है.. थोड़ा रंग लगा देती.. पूरा गीला कर

दिया और अभी दिन भी नहीं शुरू हुआ है.. चल.. अब देख.. तेरी खैर नहीं..

वो मुझे हंसते हुए चिढ़ाती हुई अन्दर भाग गई और मैं भी हाथों में रंग लगा कर उसके पीछे गया। मैं उसको रंग लगाना चाहता था लेकिन वो इधर-उधर भाग रही थी। मैंने उसको आखिर ड्राइंग रूम के बाहर वाले आंगन में दबोच लिया, वह 'न.. न..' करती रही.. फिर भी मैंने उसके चेहरे पर रंग लगा दिया।

मैंने जब उसको छोड़ा.. तो उसने भी कुछ देर के बाद आकर पीछे से रंग लगा दिया। मैंने उसी वक्त उसको पकड़ लिया और उसके ही हाथों से उसका चेहरा रंग दिया। वह कसमसाने लगी.. तो उसको मैंने दीवार के सहारे बांध दिया। उसी वक्त कुछ ऐसा हुआ कि मैंने अपने बदन का भार उस पर डाल कर दीवार से चिपका दिया और उसकी चूचियाँ मेरे सीने से लग गईं।

तभी हमारी आँखें मिलीं और मैंने हल्के से अपनी पकड़ उस पर से छोड़ दी, वह वहीं खड़ी रही और उसने अपनी आँखें झुका दीं।

फिर बिना सोचे-समझे जब मैं उससे अलग हुआ.. तो उसकी चूचियों को दबा दिया। वह चिहुंक पड़ी और भाग गई।

मेरी हालत खराब हो गई.. मुझे डर था कि वो कहीं किसी से कह न दे। लेकिन 2-3 दिनों तक जब किसी ने कुछ नहीं कहा.. तो मैं समझ गया कि उसने किसी से नहीं कहा है। फिर तो मेरी हिम्मत खुल गई.. जब अगली बार कुछ दिनों के बाद वह मुझे अकेले में मिली.. उस वक्त वो मेरी बहन से मिलने आई थी.. इस वक्त वो सीधे स्कूल से अपनी बहन से मिलने आई थी.. लेकिन उसकी बहन थी नहीं इसलिए मेरे घर मेरी छोटी बहन से मिलने चली आई।

उस वक्त मेरी बहन बाथरूम में कपड़े बदल रही थी.. तो वो मुझे कमरे में अकेले खड़ी मिल

गई।

मैंने पीछे से आकर उसकी पीठ पर हाथ रख दिया और पीछे से उसकी गर्दन पर चुम्बन कर लिया, वो चिहंक गई और मुझको खड़ा पाकर कर उसने कहा- भैया यह मत कीजिए.. ये क्या कर रहे हैं.. कोई देख लेगा तो ?

मैंने उसको वहीं उसका मुँह मोड़ते हुए उसके होंठों पर चुम्बन कर लिया और एक हाथ से चूचियों को उसके स्कूल वाले ब्लाउज के ऊपर से दबा दिया।

साथ में, मैं उसे 'आई लव यू' कहने लगा। करीब दो मिनट तक मैं उसको चूमता रहा और उसकी चूचियों को सहलाता रहा।

मेरा शरीर पीछे से उससे सटा हुआ था और मेरा खड़ा लंड उसके चूतड़ों में रगड़ रहा था।

जब मैंने उसके ब्लाउज में हाथ डालने की कोशिश की.. तो मुझे अपने को छुड़ा कर वो भाग गई। इसी तरह जब भी मौका मिलता रहा.. हम लोग चूमने लगे और धीरे-धीरे वो मुझसे खुलने लगी।

एक दिन ऐसा भी मौका आया कि मुझे उसके साथ एकांत मिल गया। उस दिन मैंने पहली बार उसकी चूचियों को उसके ब्लाउज ऊपर से निकाल लिया और उनको चूसा।

उसकी चूचियाँ बहुत ही कड़ी और मस्त थीं.. उनमें काफी भराव था।

मेरे उस तरह से चूसने से वो सिसया गई और बदहवास हो गई।

मैं भी साल भर बाद किसी लड़की के साथ इस अवस्था तक पहुँचा था.. इसलिए मेरे दिमाग में केवल उसको चोदने के अलावा कुछ घूम ही नहीं रहा था।

उस दिन के बाद जब भी मौका लगता.. वो मुझे अपनी चूचियों से खेलने देती और मैं भी पैट के ऊपर से ही अपने लंड को स्कर्ट के ऊपर से ही उसकी गांड उसकी चूत पर रगड़ता था।

एक दिन.. जब मालूम था कि हम अकेले है.. मैंने उसको स्टोर रूम में खींच लिया और अपना लंड अपनी पैन्ट से निकाल कर उसके हाथ पर रख दिया ।
वहाँ अँधेरा था.. इसलिए जब उसने अपने हाथ में मेरा लंड महसूस किया तो कूद पड़ी ।
जवानी का भन्नाया लंड था बिल्कुल सख्त और गर्म..

एक बारगी तो उसने हाथ ही हटा दिया.. बड़ी मुश्किल से मैंने उसके हाथ को पकड़ कर अपना लंड उसको पकड़ाया ।
जैसा मेरा अनुभव था.. जैसे-जैसे मैं उसको चूमने और उसकी चूचियों को दबाने लगा.. वो भी मेरे लंड को दबाने लगी ।

उस दिन से उसका लंड का डर खत्म हो गया और मौके बे मौके वो मेरा लंड सहलाने लगी ।
यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

एक दिन वह दिन में अपनी दीदी से मिलने आई.. उस दिन सन्डे था । मेरी बहनों के स्कूल में स्कूल का वार्षिक दिवस था.. तो सब लोग वहीं गए थे ।

वो जब आई.. तो वह मुझसे बाहर ही मिल गई । मैंने इशारे से अपने पास बुलाया तो वह बोली- दीदी के पास जा रही हूँ ।
मैंने कहा- उनसे बाद में मिल लेना.. अभी यहाँ आ जाओ ।

वह एक बार रुकी.. इधर-उधर देखा और तेजी से मेरे पास अन्दर आ गई ।
तब मैंने कहा- आज कोई नहीं है घर पर..

वह थोड़ा घबड़ाई.. लेकिन मैंने उसको बाँहों में लेकर उसके होंठों को अपने होंठों से दबा दिया और चूमने लगा ।

अब आज मैं सारिका की चुदाई का मन बना चुका था पर शायद इसके लिए वो पूरी तरह से

तैयार नहीं थी और मुझे तो आज उसकी चूत चोदनी हो थी..
देखिए क्या-क्या होता है.. अगले भाग में मिलते हैं। अपने ईमेल जरूर भेजिएगा।
कहानी जारी है।

bluebull0003@yahoo.co.in

Other stories you may be interested in

प्यारी भाभी संग जीवन का पहला सेक्स

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम राज है. मैं गुजरात में भावनगर से हूँ. हालांकि अब मैं सूरत में रहता हूँ. यह मेरी पहली कहानी है. मुझे लिखना नहीं आता है, इसलिए थोड़ा ऊपर नीचे हो जाए, तो मुझे मेल करके जरूर [...]

[Full Story >>>](#)

भाभी की कुंवारी बहन की सीलतोड़ चुदाई

अन्तर्वासना के सभी दोस्तों को मेरा प्रणाम, मेरा नाम पंकज सिंह है. मैं पिछले 3 साल से दिल्ली में पढ़ाई कर रहा हूँ. मेरी उम्र अभी 24 साल है. मेरा कद 5 फुट 9 इंच है. मैं गोरे रंग का [...]

[Full Story >>>](#)

चुदने को बेताब मेरी प्यासी जवानी-1

दोस्तो, मेरा नाम ऋतु है, ऋतु वर्मा, सरनेम पर मत जाइए, मैं एक बंगाली लड़की हूँ। उम्र है 24 साल, लेकिन ब्रा मैं 38 साइज़ का पहनती हूँ। देखा 38 साइज़ सुनते ही मुंह में पानी आ गया न आपके। [...]

[Full Story >>>](#)

चाची को चोद कर अपना लिया

ये कहानी मेरे एक दोस्त की है. मैं उसकी तरफ से ये कहानी प्रस्तुत कर रहा हूँ. मेरा नाम अमित है और मेरी उम्र 26 साल है. मेरे घर में मेरे पिताजी और चाचा का परिवार है, हम सब एक [...]

[Full Story >>>](#)

देसी भाभी का वासना भरा प्यार

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम मुकेश कुमार है. मैं 28 वर्ष का 5 फुट 6 इंच का सामान्य कद काठी का दिल्ली का रहने वाला आदमी हूँ. मेरे लिंग का आकार मैंने कभी मापा तो नहीं, पर लगभग साढ़े छह इंच [...]

[Full Story >>>](#)

